जन एक्सप्रेस

/janexpresslive

लखनऊ, सोमवार, 28 जून, 2021, वर्ष : 12, अंक : 254, पृष्ठ : 12, मूल्य ₹ 3.00/-

अरहर की वैज्ञानिक खेती पर जारी हुई एडवाइजरी

जन एक्सप्रेस संवाददाता

कानपुर नगर। अरहर हमारे देश की एक दलहनी फसल है जिसकी बुवाई मुख्य रूप से खरीफ के मौसम में जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई के पहले पखवाड़े की जाती है अरहर की खेती असिंचित एवं शुष्क क्षेत्रों में लाभकारी सिद्ध हो सकती है। यह बात सीएसएयू के कुलपति डॉ.डी.आर. सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में रविवार को विश्वविद्यालय के दलहन वैज्ञानिक डॉ. अखिलेश मिश्रा ने देर से पकने वाली अरहर की वैज्ञानिक खेती पर एडवाइजरी जारी करते हुए किसानों से कही।

डॉ.सिंह ने बताया कि अरहर की प्रमुख उन्नतशील प्रजातियां नरेंद्र अरहर-1, नरेंद्र अरहर-2, आजाद अरहर, अमर, पूसा-9,बहार, मालवीय -13, मालवीय- 6 एवं आई पी ए- 203 है। इसकी खेती के लिए अच्छी जल निकास वाली हल्की दोमट एवं भारी मृदायें सर्वोत्तम होती हैं।

उन्होंने बताया कि अरहर का बीज 12 से 15 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से का कतारों से कतार की दूरी 60-75 सेंटीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 20 से 25 सेंटीमीटर पर रखकर बुवाई करनी चाहिए।उन्होंने किसानों को 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट अंतिम जुताई के समय खेत में मिला देने की सलाह दी जिससे फसल की पैदावार में बढ़ोत्तरी की जा सकती है। उन्होंने बताया कि किसान वैज्ञानिक विधि से अरहर की खेती कर असिंचित क्षेत्रों में 12 से 16 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा सिंचित क्षेत्रों में भाई से 25 कुंटल प्रति हेक्टेयर की पैदावार प्राप्त कर सकते हैं। डॉ. मिश्रा ने बताया कि 100 ग्राम अरहर की दाल से ऊर्जा -343 किलो कैलोरी, कार्बोहाइड्रेट- 62.78 ग्राम, फाइबर -15 ग्राम, प्रोटीन- 21.7 ग्राम तथा विटामिंस जैसे थायमीन (बी1)-0.64 3 मिलीग्राम, रिबोफैविविन (बी2)- 0.187 मिलीग्राम, नियासिन (बी3)-2.965 मिलीग्राम, तथा खनिज पदार्थ जैसे कैल्शियम 130 मिलीग्राम, आयरन 5.23 मिलीग्राम, मैग्नीशियम 183 मिलीग्राम, मैग्नीज 1.791 मिलीग्राम, फास्फोरस 367 मिलीग्राम, पोटेशियम 1392 मिलीग्राम, सोडियम 17 मिलीग्राम एवं जिंक 2.76 मिलीग्राम आदि पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। यह मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए काफी लाभकारी है।

देर से पकने वाली अरहर की वैज्ञानिक खेती से असिंचित क्षेत्रों में 12 से 16 कुंतल तथा सिंचित क्षेत्रों में 22 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर उत्पादन संभव : डॉक्टर अखिलेश मिश्रा

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में रविवार को विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के प्रोफेसर एवं दलहन वैज्ञानिक डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने देर से पकने वाली अरहर की वैज्ञानिक खेती की एडवाइजरी किसानों हेतु जारी की है। डॉ. मिश्रा ने बताया कि अरहर हमारे देश की प्रमुख दलहनी फसल है जिसे मुख्य रूप से खरीफ के मौसम में जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई के प्रथम पखवाड़े तक बुवाई की जाती है। अरहर फसल द्वारा दलहन उत्पादन के साथ-साथ 150 से 200 किलोग्राम वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कर मृदा उर्वरता एवं उत्पादकता में वृद्धि करती है। उन्होंने बताया कि असिंचित एवं शुष्क क्षेत्रों में अरहर की खेती लाभकारी सिद्ध हो सकती है। डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने बताया कि 100 ग्राम अरहर की दाल से ऊर्जा -343 किलो कैलोरी,कार्बोहाइड्रेट- 62.78 ग्राम,फाइबर -15 ग्राम, प्रोटीन- 21.7 ग्राम तथा विटामिंस जैसे थायमीन (बी1)-0.64 3 मिलीग्राम, रिबोफैविविन (बी2)-0.187 मिलीग्राम, नियासिन (बी3)-2.965 मिलीग्राम, तथा खनिज पदार्थ जैसे कैल्शियम 130 मिलीग्राम, आयरन 5.23 मिलीग्राम, मैग्नीशियम 183 मिलीग्राम, मैगनीज 1.791 मिलीग्राम, फास्फोरस 367 मिलीग्राम, पोटेशियम 1392 मिलीग्राम, सोडियम 17 मिलीग्राम एवं जिंक 2.76 मिलीग्राम आदि पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। जो मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए काफी लाभकारी है।

डॉक्टर मिश्रा ने किसानों को सलाह दी है कि अरहर की उन्नतशील प्रजातियां जैसे नरेंद्र अरहर-1, नरेंद्र अरहर-2, आजाद अरहर, अमर, पूसा-9,बहार, मालवीय -13, मालवीय- 6 एवं आई पी ए- 203 प्रमुख है। भूमि की चयन हेतु उन्होंने बताया कि अच्छी जल निकास वाली हल्की दोमट एवं भारी मृदायें सर्वोत्तम होती हैं अरहर का बीज 12 से 15 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से का कतारों से कतार की दूरी 60-75 सेंटीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 20 से 25 सेंटीमीटर पर रखकर बुवाई करनी चाहिए। रोगों की रोकथाम हेतु बुवाई के पूर्व ट्राइकोडरमा विरिडी 10 ग्राम प्रति किलो बीज या थीरम तथा 1 ग्राम कार्बेंडाजिम से शोधित करना चाहिए तत्पश्चात 5 ग्राम राइजोबियम + 5 ग्राम पीएसबी कल्चर से प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके बोयें। उन्होंने बताया कि बुवाई से पूर्व 20 किलोग्राम नत्रजन, 50 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश तथा 20 किलोग्राम सल्फर गंधक प्रति हेक्टेयर बीज के नीचे देना चाहिए। उन्होंने सलाह दी है कि 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट अंतिम जुताई के समय खेत में मिला देने से फसल पैदावार में बढ़ोतरी होती है। डॉक्टर मिश्रा ने बताया कि यदि किसान वैज्ञानिक विधि से अरहर की खेती करते हैं तो असिंचित क्षेत्रों में 12 से 16 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा सिंचित क्षेत्रों में 22 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर अरहर का उत्पादन होता है।

R.N.I. NO UPHIN@ 2013/53179

कानपुर नगर कानपुर देहात उन्नाव हमीरपुर कन्नौज इटावा उरई जालौन लखनऊ आगरा मथुरा औरैया इलाहाबाद से एक साथ प्रसारित

वर्ष - 8
अंक - 221
कानपुर
सोमवार 28
जून 2021
पृष्ठ - 4
मूल्य 1:00

2 गज की दूरी, मास्क है जरूरी

सोशल रिपोर्टर

हिन्दी दैनिक

देर से पकने वाली अरहर की वैज्ञानिक खेती-डॉक्टर अखिलेश मिश्रा

सत्य प्रकाश

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के प्रोफेसर एवं दलहन वैज्ञानिक डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने देर से *पकने वाली अरहर की वैज्ञानिक खेती* की एडवाइजरी किसानों हेतु जारी की है। डॉ मिश्रा ने बताया कि अरहर हमारे देश की प्रमुख दलहनी फसल है जिसे मुख्य रूप से खरीफ के मौसम में जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई के प्रथम पखवाड़े तक बुवाई की जाती है। उन्होंने कहा कि अरहर फसल द्वारा दलहन उत्पादन के साथ-साथ 150 से 200 किलोग्राम वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कर मृदा उर्वरता एवं उत्पादकता में वृद्धि करती है। उन्होंने बताया कि असिंचित एवं शुष्क क्षेत्रों में अरहर की खेती लाभकारी सिद्ध हो सकती है। डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने बताया कि 100 ग्राम अरहर की दाल से ऊर्जा -343 किलो कैलोरी,कार्बोहाइड्रेट- 62.78 ग्राम,फाइबर -15 ग्राम, प्रोटीन- 21.7 ग्राम तथा विटामिंस जैसे थायमीन(बी1)-0.64 3 मिलीग्राम,रिबोफैविविन (बी2)-0.187 मिलीग्राम, नियासिन (बी3)-2.965 मिलीग्राम, तथा खनिज पदार्थ जैसे कैल्शियम 130 मिलीग्राम, आयरन 5.23 मिलीग्राम, मैग्नीशियम 183 मिलीग्राम, मैग्नीज 1.791 मिलीग्राम, फास्फोरस 367 मिलीग्राम, पोटेशियम 1392 मिलीग्राम, सोडियम 17 मिलीग्राम एवं जिंक 2.76 मिलीग्राम आदि पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। जो मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए काफी लाभकारी है। डॉक्टर मिश्रा ने किसानों को सलाह दी है कि अरहर की उन्नतशील प्रजातियां जैसे नरेंद्र अरहर-1, नरेंद्र अरहर-2, आजाद अरहर, अमर, पूसा-9,बहार, मालवीय -13, मालवीय- 6 एवं आई पी ए- 203 प्रमुख है। भूमि की चयन हेतु उन्होंने बताया कि अच्छी जल निकास वाली हल्की दोमट एवं भारी मृदायें सर्वोत्तम होती हैं अरहर का बीज 12 से 15 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से का कतारों से कतार की दूरी 60-75 सेंटीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 20 से 25 सेंटीमीटर पर रखकर बुवाई करनी चाहिए। रोगों की रोकथाम हेतु बुवाई के पूर्व ट्राइकोडरमा विरिडी 10 ग्राम प्रति किलो बीज या थीरम तथा 1 ग्राम कार्बेंडाजिम से शोधित करना चाहिए तत्पश्चात 5 ग्राम राइजोबियम + 5 ग्राम पीएसबी कल्चर से प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके बोयें। उन्होंने बताया कि बुवाई से पूर्व 20 किलोग्राम नत्रजन, 50 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश तथा 20 किलोग्राम सल्फर गंधक प्रति हेक्टेयर बीज के नीचे देना चाहिए। उन्होंने सलाह दी है कि 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट अंतिम जुताई के समय खेत में मिला देने से फसल पैदावार में बढ़ोतरी होती है। डॉक्टर मिश्रा ने बताया कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से अरहर की खेती करते हैं तो असिंचित क्षेत्रों में 12 से 16 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा सिंचित क्षेत्रों में 22 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर अरहर का उत्पादन होता है।

www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress

WORLD ख़बर EXPRESS

WORLD ख़बर एक्सप्रेस

27 जून 2021, रविवार www.worldkhabarexpress.media MID DAY E-PAPER www.worldkhabarexpr

सीएसए के दलहन अनुभाग के प्रोफेसर ने किसानों को दी जानकारी;

देर से पकने वाली अरहर की करें वैज्ञानिक खेतीः डॉ .मिश्रा

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के प्रोफेसर एवं वैज्ञानिक डॉ. अखिलेश मिश्रा ने देर से पकने वाली अरहर की वैज्ञानिक खेती के लिए एडवाइजरी जारी की। डॉ. मिश्रा ने बताया कि अरहर हमारे देश की प्रमुख दलहनी फसल है जिसे मुख्य रूप से खरीफ के मौसम में जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई के प्रथम पखवाड़े तक बुवाई की जाती है। उन्होंने कहा कि अरहर फसल के जरिए दलहन उत्पादन के साथ-साथ 150 से 200 किलोग्राम वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कर मृदा उर्वरता व उत्पादकता में वृद्धि करती है। असिंचित एवं शुष्क क्षेत्रों में अरहर की खेती लाभकारी सिद्ध हो सकती है। 100 ग्राम अरहर की दाल से ऊर्जा -343 किलो कैलोरी, कार्बोहाइड्रेट- 62.78 ग्राम, फाइबर -15 ग्राम, प्रोटीन- 21.7 ग्राम तथा विटामिंस जैसे थायमीन (बी1)-0.64 3 मिलीग्राम, रिबोफैविविन (बी2)-0.187 मिलीग्राम, नियासिन (बी3)-2.965 मिलीग्राम तथा खनिज पदार्थ जैसे कैल्शियम 130 मिलीग्राम, आयरन 5.23 मिलीग्राम, मैग्नीशियम 183 मिलीग्राम, मैग्नीज 1.791 मिलीग्राम, फास्फोरस 367 मिलीग्राम, पोटेशियम 1392 मिलीग्राम, सोडियम 17 मिलीग्राम और जिंक 2.76 मिलीग्राम आदि पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। यह स्वास्थ्य के लिए काफी लाभकारी है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि अरहर की उन्नतशील प्रजातियां जैसे नरेंद्र अरहर-1, नरेंद्र अरहर-2, आजाद अरहर, अमर, पूसा-9, बहार, मालवीय - 13, मालवीय- 6 एवं आईपीए- 203 प्रमुख है। भूमि चयन के लिए उन्होंने बताया कि अच्छी जल निकास वाली हल्की दोमट एवं भारी मृदायें सर्वोत्तम होती हैं। अरहर का बीज 12 से 15 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से कतारों में कतार की दूरी 60-75 सेंटीमीटर और पौधे से पौधे की दूरी 20 से 25 सेंटीमीटर पर रखकर बुवाई करनी चाहिए। रोगों की रोकथाम के लिए बुवाई के पूर्व ट्राइकोडरमा विरिडी 10 ग्राम प्रति किलो बीज या थीरम तथा 1 ग्राम कार्बेंडाजिम से शोधित करना चाहिए तत्पश्चात 5 ग्राम राइजोबियम + 5 ग्राम

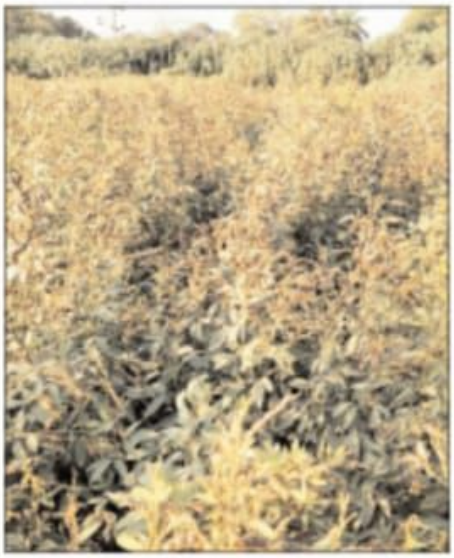

पीएसबी कल्चर से प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके बोएं। उन्होंने बताया कि बुवाई से पहले 20 किलोग्राम नत्रजन, 50 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश तथा 20 किलोग्राम सल्फर गंधक प्रति हेक्टेयर बीज के नीचे देना चाहिए। उन्होंने सलाह दी है कि 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट अंतिम जुताई के समय खेत में मिला देने से फसल पैदावार में बढ़ोतरी होती है। यदि किसान, वैज्ञानिक विधि से अरहर की खेती करते हैं तो असिंचित क्षेत्रों में 12 से 16 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा सिंचित क्षेत्रों में 22 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर अरहर का उत्पादन होता है।

News Expert
13 घंटे · Facebook for Android ·

देर से पकने वाली अरहर की वैज्ञानिक खेती:- डॉक्टर अखिलेश मिश्रा
कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के प्रोफेसर एवं दलहन वैज्ञानिक डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने देर से *पकने वाली अरहर की वैज्ञानिक खेती* की एडवाइजरी किसानों हेतु जारी की है। डॉ मिश्रा ने बताया कि अरहर हमारे देश की प्रमुख दलहनी फसल है जिसे मुख्य रूप से खरीफ के मौसम में जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई के प्रथम पखवाड़े तक बुवाई की जाती है। उन्होंने कहा कि अरहर फसल द्वारा दलहन उत्पादन के साथ-साथ 150 से 200 किलोग्राम वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कर मृदा उर्वरता एवं उत्पादकता में वृद्धि करती है। उन्होंने बताया कि असिंचित एवं शुष्क क्षेत्रों में अरहर की खेती लाभकारी सिद्ध हो सकती है। डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने बताया कि 100 ग्राम अरहर की दाल से ऊर्जा -343 किलो कैलोरी,कार्बोहाइड्रेट- 62.78 ग्राम,फाइबर -15 ग्राम, प्रोटीन- 21.7 ग्राम तथा विटामिंस जैसे थायमीन(बी1)-0.64 3 मिलीग्राम,रिबोफैविविन (बी2)-0.187 मिलीग्राम, नियासिन (बी3)-2.965 मिलीग्राम, तथा खनिज पदार्थ जैसे कैल्शियम 130 मिलीग्राम, आयरन 5.23 मिलीग्राम, मैग्नीशियम 183 मिलीग्राम, मैग्नीज 1.791 मिलीग्राम, फास्फोरस 367 मिलीग्राम, पोटेशियम 1392 मिलीग्राम, सोडियम 17 मिलीग्राम एवं जिंक 2.76 मिलीग्राम आदि पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। जो मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए काफी लाभकारी है। डॉक्टर मिश्रा ने किसानों को सलाह दी है कि अरहर की उन्नतशील प्रजातियां जैसे नरेंद्र अरहर-1, नरेंद्र अरहर-2, आजाद अरहर, अमर, पूसा-9,बहार, मालवीय -13, मालवीय- 6 एवं आई पी ए- 203 प्रमुख है। भूमि की चयन हेतु उन्होंने बताया कि अच्छी जल निकास वाली हल्की दोमट एवं भारी मृदायें सर्वोत्तम होती हैं अरहर का बीज 12 से 15 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से का कतारों से कतार की दूरी 60-75 सेंटीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 20 से 25 सेंटीमीटर पर रखकर बुवाई करनी चाहिए। रोगों की रोकथाम हेतु बुवाई के पूर्व ट्राइकोडरमा विरिडी 10 ग्राम प्रति किलो बीज या थीरम तथा 1 ग्राम कार्बेंडाजिम से शोधित करना चाहिए तत्पश्चात 5 ग्राम राइजोबियम + 5 ग्राम पीएसबी कल्चर से प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके बोयें। उन्होंने बताया कि बुवाई से पूर्व 20 किलोग्राम नत्रजन, 50 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश तथा 20 किलोग्राम सल्फर गंधक प्रति हेक्टेयर बीज के नीचे देना चाहिए। उन्होंने सलाह दी है कि 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट अंतिम जुताई के समय खेत में मिला देने से फसल पैदावार में बढ़ोतरी होती है। डॉक्टर मिश्रा ने बताया कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से अरहर की खेती करते हैं तो असिंचित क्षेत्रों में 12 से 16 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा सिंचित क्षेत्रों में 22 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर अरहर का उत्पादन होता है। (डॉ खलील खान), मीडिया प्रभारी, चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर।

राष्ट्रीय
सहारा
कानपुर • सोमवार • 28 जून • 2021
4

शुष्क क्षेत्रों में लाभकारी होगी अरहर की खेती

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

कानपुर।

सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के दलहन अनुभाग के प्रोफेसर एवं दलहन वैज्ञानिक डॉ. अखिलेश मिश्रा ने देर से पकने वाली अरहर की वैज्ञानिक खेती को लेकर किसानों के लिए सलाह जारी की है। उन्होंने कहा है कि असिंचित व शुष्क क्षेत्रों में अरहर की खेती लाभकारी हो सकती है।

डॉ. मिश्रा के अनुसार खरीफ के मौसम में जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई के प्रथम पखवाड़े तक अरहर की बुवाई की जाती है। उन्होंने कहा कि अरहर फसल दलहन उत्पादन के साथ-साथ 150 से 200 किग्रा वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कर मृदा उर्वरता व उत्पादकता में वृद्धि करती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि अरहर की उन्नतशील प्रजातियां जैसे नरेन्द्र अरहर 1 व 2, आजाद अरहर, अमर, पूसा-9, बहार, मालवीय-13, मालवीय-6 एवं आईपीए-203 प्रमुख हैं।

भूमि के चयन पर उन्होंने कहा है कि अच्छी जल निकास वाली हल्की दोमट एवं भारी मृदाएं सर्वोत्तम होती हैं। अरहर का बीज 12 से 15 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर के साथ समुचित कतारों से कतार व पौधे से पौधे की दूरी को ध्यान में रखकर बुवाई करनी चाहिए। बीज शोधन के लिए दवाओं व खाद का उपयोग भी करना चाहिए।

स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभकारी...

डॉ. अखिलेश मिश्रा ने बताया कि 100 ग्राम अरहर की दाल में कैलोरी, कार्बोहाइड्रेट, फाइबर, प्रोटीन, विटामिंस जैसे थायमीन, रिबोफैविविन, नियासिन, कैल्शियम, मैग्नीज, फास्फोरस, पोटेशियम, सोडियम, जिंक आदि पोषकतत्व प्रचुर मात्रा में होते है, जो मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए काफी लाभकारी है।

देर से पकने वाली अरहर की वैज्ञानिक खेती:– डॉ अखिलेश मिश्रा

27/06/2021

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के दलहन अनुभाग के प्रोफेसर एवं दलहन वैज्ञानिक डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने देर से पकने वाली अरहर की वैज्ञानिक खेती की एडवाइजरी किसानों हेतु जारी की है। डॉ मिश्रा ने बताया कि अरहर हमारे देश की प्रमुख दलहनी फसल है जिसे मुख्य रूप से खरीफ के मौसम में जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई के प्रथम पखवाड़े तक बुवाई की जाती है। उन्होंने कहा कि अरहर फसल द्वारा दलहन उत्पादन के साथ–साथ 150 से 200 किलोग्राम वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कर मृदा उर्वरता एवं उत्पादकता में वृद्धि करती है। उन्होंने बताया कि असिंचित एवं शुष्क क्षेत्रों में अरहर की खेती लाभकारी सिद्ध हो सकती है। डॉक्टर अखिलेश मिश्रा ने बताया कि 100 ग्राम अरहर की दाल से ऊर्जा –343 किलो कैलोरी,कार्बोहाइड्रेट– 62.78 ग्राम,फाइबर –15 ग्राम, प्रोटीन– 21.7 ग्राम तथा विटामिंस जैसे थायमीन(बी1)–0.64 3 मिलीग्राम,रिबोफैविविन (बी2)–0.187 मिलीग्राम, नियासिन (बी3)–2.965 मिलीग्राम, तथा खनिज पदार्थ जैसे कैल्शियम 130 मिलीग्राम, आयरन 5.23 मिलीग्राम, मैग्नीशियम 183 मिलीग्राम, मैग्नीज 1.791 मिलीग्राम, फास्फोरस 367 मिलीग्राम, पोटेशियम 1392 मिलीग्राम, सोडियम 17 मिलीग्राम एवं जिंक 2.76 मिलीग्राम आदि पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। जो मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए काफी लाभकारी है। डॉक्टर मिश्रा ने किसानों को सलाह दी है कि अरहर की उन्नतशील प्रजातियां जैसे नरेंद्र अरहर–1, नरेंद्र अरहर–2, आजाद अरहर, अमर, पूसा–9,बहार, मालवीय –13, मालवीय– 6 एवं आई पी ए– 203 प्रमुख है। भूमि की चयन हेतु उन्होंने बताया कि अच्छी जल निकास वाली हल्की दोमट एवं भारी मृदायें सर्वोत्तम होती हैं अरहर का बीज 12 से 15 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से का कतारों से कतार की दूरी 60–75 सेंटीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 20 से 25 सेंटीमीटर पर रखकर बुवाई करनी चाहिए। रोगों की रोकथाम हेतु बुवाई के पूर्व ट्राइकोडरमा विरिडी 10 ग्राम प्रति किलो बीज या थीरम तथा 1 ग्राम कार्बेंडाजिम से शोधित करना चाहिए तत्पश्चात 5 ग्राम राइजोबियम, 5 ग्राम पीएसबी कल्चर से प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके बोयें। उन्होंने बताया कि बुवाई से पूर्व 20 किलोग्राम नत्रजन, 50 किलोग्राम फास्फोरस, 20 किलोग्राम पोटाश तथा 20 किलोग्राम सल्फर गंधक प्रति हेक्टेयर बीज के नीचे देना चाहिए। उन्होंने सलाह दी है कि 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट अंतिम जुताई के समय खेत में मिला देने से फसल पैदावार में बढ़ोतरी होती है। डॉक्टर मिश्रा ने बताया कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से अरहर की खेती करते हैं तो असिंचित क्षेत्रों में 12 से 16 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा सिंचित क्षेत्रों में 22 से 25 कुंतल प्रति हेक्टेयर अरहर का उत्पादन होता है।